“आरोहण” के कुछ अंश

"नहीं साहब, वह थानेदार जनप्रतिनिधियों की इज़्ज़त नहीं करता है, आदिवासियों के ख़िलाफ़ झूठे मुकदमे बना देता है, उनसे ज़बरदस्ती मुर्गा बुलवाता है, उनकी औरतों पर ग़लत नज़र रखता है।" जितना त्रिमूर्ति ने सिखाया-पढ़ाया था, उतना महादेव एक स्वर में बोल गया। "लेकिन हुजूर! वह बड़ा धार्मिक और पूजा-पाठ वाला आदमी भी है," इतना और ग़लती से बोल गया वह! असल में थानेदार के कमरे में छोटा-सा लकड़ी का मंदिर एक कोने में रखा था, जिसमें हनुमान जी की मूर्ति थी। यह चीज़ महादेव ने कल देख ली थी, तो उसके भोले-भाले मन ने यह बात अपनी ओर से जोड़ दी! रईसचंद्र यह सुनकर अंदर ही अंदर भन्ना गया लेकिन इस समय वह कर भी क्या सकता था।

कालिका प्रसाद बड़ा ही शौक़ीन व मस्त तबियत का आदमी था। इस ठेके का ठेकेदार भी इतने राजसी ठाठबाट से नहीं रहता होगा जितने कि कालिका प्रसाद के थे! वह सुबह

पाँच बजे उठ जाता था। उठते ही नित्यकर्मों से निपट कर दस किलोमीटर की दौड़ लगाता था! फिर आकर गाय का दूध ख़ुद ही निकालता था। एक जर्सी गाय उसने अपने लिए ही पाल रखी थी। महादेव सात बजे उसके लिए एक बड़े पंजाबी गिलास में दूध ले आया करता था। बिना गर्म किया दूध वह एक ही बार में पूरा गटक लेता था। फिर साढ़े आठ बजे उसके लिए ताज़े फलों के रस के गिलास आ जाते थे। रस के लिए फलों का इंतज़ाम एक-दो दिन पहले ही हो जाता था। तीन-तीन चार-चार गिलास रस वह पी जाता था। भट्टी में ही कालिका प्रसाद का एक बड़ा-सा हॉलनुमा कमरा था। उसमें हर कोई नहीं जा सकता था। आजकल केवल महादेव को इसमें प्रवेश की अनुमति थी। कालिका प्रसाद के अलावा भट्टी में दस के लगभग पहलवान भी पाल कर रखे गए थे, जो कि ठेकेदार की ओर से आबकारी विभाग को जब वे अवैध शराब के अड्डों पर छापा मारने जाया करते थे, तब मदद करते थे। ये दिनभर खटिया तोड़ते रहते थे। सुबह-शाम दंड पेलना व पेल कर खाना और गाँवों में जाकर दादागिरी करना, बस यही इनका काम था। कौन से गाँव में किसे आँख दिखाना है,

किसकी धुलाई करना है, यह कालिका प्रसाद के इशारे पर होता था।

आज भी उस दृश्य की कल्पना करने पर उसके रोंगटे खड़े हो जाते थे, मन वितृष्णा से भर जाता था। उसने लकड़ी के पुराने दरवाज़ों के छेद से झाँक कर देखा तो उसके रोंगटे खड़े हो गए, माथे पर पसीना आ गया और वह घबराहट में थर-थर काँपने लगा।

एक कमरे में दो-तीन पहलवान आप्राकृतिक मैथुन में रत थे। दो ग्रामीण लगने वाले युवकों के साथ वे ज़बरदस्ती कर रहे थे। वे गिड़गिड़ा रहे थे और पहलवान ज़्यादती कर रहे थे। एक लड़के की हालत तो ख़राब हो गयी थी। उसे ध्यान आया कि ये तो वे ही दो लड़के हैं जो कि अवैध शराब बनाने के जुर्म में भट्टी की जीप में गाँव में दबिश करने गए अमले के साथ गए पहलवानों द्वारा पकड़ लाए गए थे। आबकारी स्टाफ़ को पता ही नहीं चला था या जानबूझकर वे अनजान बने रहे, लौटते में उन्हें जीप से भट्टी में चुपचाप उतार लिया गया था!

इस बैठक में पता नहीं महादेव के कंठ में कहाँ से जान आ गयी थी कि वह कुछ बोल उठा था। हर आदमी में कुछ न कुछ प्रतिभा रूपी बीज होते हैं जो सुषुप्त पड़े रहते हैं, मौका मिलने, अनुकूल माहौल में व दूसरों को ऐसा करते देखकर वे प्रस्फुटित होना चाहते हैं। महादेव ने यह प्रश्न किया था कि किसान खुद अपनी जमीन का मालिक है, लेकिन उसे उसी के कागजात की नकल लेने के लिए पटवारी की इतनी जी हुजूरी क्यों करना पड़ती है? अपनी भूमि के 'मालिक' किसान को एक सरकारी 'नौकर' के आगे क्यों हाथ फैलाना पड़ता है? वह इस वाक्य को बोलने में वैसे तीन बार अटका था। उसके इस तरह से मुखर होने की शुरुआत देखकर रईस को अंदर ही अंदर बेहद गुस्सा आया था। लेकिन वह अपना क्रोध अंदर ही अंदर पी गया था। यह महादेव ने पता नहीं किसके, कब के अनुभव के आधार पर कैसे अचानक कहा था!

इतने अधिकारियों, मंत्री व अन्य विधायक गणों की उपस्थिति में 'हिम्मते मर्दां ' बनने के बाद महादेव आज बहुत अच्छा महसूस कर रहा था। उसका एक तरह से एक नया

अवतार आज हो गया था। आज उसने अपनी एक पहचान बनाने की शुरुआत की थी। एक ऐसा आदमी जो आज भी रईस सेठ के घर में चाय पीने के बाद उसके लिए अलग से रखे गए कप को धोकर वापिस अपनी जगह रखता था तथा अभी तक वह उनके सामने बैठने की भी हिम्मत नहीं कर पाता था, उसने उनके सामने बोलने का साहस किया था!

केन्द्रीय मंत्री भद्रसिंह के संबोधन का अमिट प्रभाव महादेव के मानस पटल पर पड़ा था। अब वह पहले जैसा धुर, गऊ महादेव नहीं था। उसके व्यक्तित्व रूपी विशाल सीढ़ी में एकदम से नीचे से ऊपर को 'आरोहण' हो गया था। उसकी चाल-ढाल, बातचीत में ही बदलाव हो गया था। अब वह गुलामी की कोई ढाल लेकर चलना नहीं चाहता था।

राजनीति के न्यूक्लियस में महादेव रूपी इलेक्ट्रॉन ने जो कि चार साल से निचली कक्षा में ही बिना किसी मक़सद के, बिना किसी परिणाम के अनवरत चक्कर लगा रहा था एकदम से अगली कक्षा में छलाँग मार दी थी। यह उसका 'क्वांटम जंप' था।

ऐसी चर्चा थी कि इस कमाऊ चौकी की पोस्टिंग के लिए नीलामी जैसी होती थी और यहाँ छह माह से अधिक की अवधि के लिए किसी अधिकारी की पोस्टिंग होती भी नहीं थी। लोग बताते थे कि यहाँ पदस्थ दो अधिकारियों ने तो कुछ ही सालों बाद अनिवार्य सेवानिवृत्ति ले ली थी!

एक बार जब वहाँ के एक वरिष्ठ अधिकारी से एक पत्रकार ने सवाल किया था कि क्या बात है कि यहाँ पदस्थ दो-दो इंस्पेक्टरों ने वीआरएस ले ली है, तो उनका बेशर्मी भरा जवाब था कि 'पेट भर गया होगा तो नौकरी को लात मार दी।'

ये सरकारी कर्मचारी थोड़े से लालच के लिए बिकाऊ बन जाते थे। कर्मचारी संगठनों के नेतागण आगे बढ़-चढ़कर ऐसे टास्क की ज़िम्मेदारी लेते थे। बदले में वे सफ़ेदपोशों द्वारा उपकृत कर दिए जाते थे। पूरे विधानसभा क्षेत्र के कर्मचारियों के मध्य एक पर्चा गोपनीय ढंग से वितरित हुआ था। उसमें लिखा हुआ था कि हर बार चुनावों में आपकी भूमिका महती

होती है। आप हर बार अपेक्षाओं पर खरे उतरे हैं। इस बार जिन लोगों ने पार्टी के साथ विश्वासघात किया है उनको बाहर करना और खड़े प्रत्याशी के लिए एक नया रिकॉर्ड क़ायम करना है, उसके बाद एक विशेष उपहार आपका इंतज़ार करेगा। इस तरह की अपील इस क्षेत्र में परंपरागत रूप से हर बार प्रसारित की जाती थी

"बेटा, राजनीति अब ऐसे ही चल रही है। मैं गाँधीवादी ज़रूर हूँ लेकिन समय के साथ हम लोगों के मानस में बहुत परिवर्तन हो चुके हैं। यह समय की माँग है, नहीं तो हम भी राजनीति रूपी इस ड्रामे से कब के बाहर फेंक दिए गए होते। तुम्हें तो इस बात पर इतना आश्चर्य हो रहा है, पार्टी ने तो मुझे बहुत आगे की सोच कर भेजा है। तुम्हारे साथ कई समस्याएँ चल रही हैं। पैसे की कमी उनमें से एक बहुत बड़ी समस्या है। कोई भी वाहन वाला तुम्हें जीप गाड़ी तक किराए पर देने तैयार नहीं है। यह क्यों है? तुम्हें मालूम है, वे जानते हैं कि तुम्हारे पास धनबल नहीं है, बाद में भुगतान की क्या गारंटी,

मिलता है कि नहीं! वैसे ही नेतागण बहुत बदनाम हैं इस मामले में।"

बनर्जी ने फिर आवाज़ लगाई, "अरे बिहारी! मेरी काग़ज़ात की अटैची लाना ज़रा।"

बिहारी ने जो उनके साथ गाड़ी में आया था, गाड़ी से उठाकर एक काले रंग की अटैची लेकर सुब्रत बनर्जी के पास रख दी। इसके बाद वह बाहर चला गया।

उसके जाने के बाद उन्होंने कुछ काग़ज़ों में लिपटे बंडल निकाले और महादेव की ओर बढ़ाकर कहा कि यह पार्टी की ओर से है और उसका आदेश है।

"यह क्या है दादा?" महादेव ने आश्चर्य से कहा।

"अरे कुछ नहीं, एक छोटी सी सहयोग रक़म है! तुम पार्टी के समर्थन में बैठने को तैयार हो रहे हो तो उसकी क्षतिपूर्ति व जो अपमान पार्टी के निर्णय से हुआ है, उसकी क्षतिपूर्ति है!"

अलका अब अपने ससुराल को लगभग भूल चुकी थी, उसने अपने आपको एनजीओ के काम में ही पूरी तरह

समर्पित कर दिया था ताकि उसका भूतकाल उसका सतत पीछा कर उसके मनोमस्तिष्क में न छाया रहे। उसे अपने स्वभाव व मन के अनुरूप यह काम लगता था। गाँव की महिलाओं को उनके स्व सहायता समूह गठित कर सशक्त करने, उन्हें साक्षर-शिक्षित करने, तथा गाँव के खेतों के लिए योजना बनाने आदि कामों में उसका मन रमता था। एक मीटिंग में उसे दिल्ली जाने का मौक़ा भी मिला था। उसे सबसे ज़्यादा सुकून समाज-सेवा के क्षेत्र में काम कर रहे लोगों के बीच ही मिलता था। यही कारण था कि महादेव में उसे अपनी पसंद के एक साथी की झलक मिली थी। वैसे तो वह पहली शादी के कड़वे अनुभव के कारण अब पुनः विवाह की किसी बात से ही चिढ़ने लगी थी।

रात तीन बजे महादेव की नींद खुली तो उसने देखा कि अलका उससे लिपटी पड़ी है। उसके पूरे शरीर में बिजली का करंट दौड़ गया। उसने कसकर अलका को भींच लिया, अलका ने भी नींद में ही महादेव को भींच लिया। दोनों इसी तरह एक-दूसरे की बाँहों में कुछ देर तक लिपटे पड़े रहे। बाद

में दोनों की कब नींद लग गई पता ही नहीं चला। सुबह आठ बजे पहले अलका की नींद खुली। बाद में महादेव नौ बजे क़रीब बिस्तर से जब उठा तो उसने देखा कि अलका तो पहले से ही तैयार हो चुकी है। आज उसे अलका किसी अप्सरा से कम नहीं लग रही थी। स्वर्णिम रंग की साड़ी में उसका रंग भी और निखार पाकर स्वर्णिम हो चला था। उसकी लम्बी-छरहरी काया व साड़ी से झाँकता नाभि का हिस्सा उसे बहुत लुभा रहा था। साड़ी-ब्लाऊज़ में वह किसी परी की भाँति लग रही थी, वह उसे ताकता ही रह गया था।